Date
26/04/2021
monday

Page-1

E-content details

Name - Sri Gangadhar
Designation - Assistant Prof. (maths)
Mobile no - 8416915365
College name - T.N.A.T.T.C Harigaon.
Class - B.Ed (Session-2020-22)
Subject - Childhood & Growing up.
Topic - "Theories of Personality"

व्यक्तित्व के सिद्धान्तः-

मनुष्य का व्यक्तित्व क्या है और इसका निर्माण कैसे होता है, इस सम्बन्ध में कुछ मनोवैज्ञानिकों ने अपने प्रयोगों के आधार पर कुछ आधारभूत तथ्य प्रस्तुत किये हैं जिसे व्यक्तित्व का सिद्धान्त कहा जाता है, जिसके अध्ययन से व्यक्तित्व के सम्प्रत्यय को समझने में कुछ सहायता मिल सकती है। व्यक्तित्व की व्याख्या करने वाले मुख्य सिद्धान्त निम्न हैं-

(1) मनोविश्लेषण सिद्धान्त। (Psycho-Analytical Theo...)
(2) लक्षण सिद्धान्त। (Trait Theories)
(3) प्रकार सिद्धान्त। (Type Theories)
(4) माँग सिद्धान्त (Need Theories)
(5) मानवतावादी सिद्धान्त। (Humanistic theories)

Scanned with CamScanner

1) मनोविश्लेषण सिद्धान्त :- (Psycho-Analytic theory)

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन मनोवैज्ञानिक फ्रायड महोदय ने किया है। फ्रायड ने मनुष्य की मानसिक क्रियाओं का विश्लेषण किया और उसके आधार पर यह कहा कि मनुष्य का व्यवहार उसके 'चेतन' (conscious) से अधिक उसके अचेतन (unconscious) पर निर्भर करता है। अचेतन से फ्रायड महोदय का तात्पर्य मनुष्य के अनेक असंतृप्त भावनाओं के संचय से है। उन्होंने स्पष्ट रूप से बताया कि मनुष्य की असंतृप्त इच्छाएँ अनजाने में उसके व्यवहार को प्रभावित करती है। व्यक्तित्व निर्माण के संदर्भ में उन्होंने कहा कि मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण में इदम (Id), अहम (Ego) और पराहम् (Super Ego) का विशेष महत्व होता है।

फ्रायड महोदय के अनुसार इदम् मनुष्य की जन्मजात प्रवृत्ति है। जिसमें व्यक्ति की मूल प्रतिक्रियाएँ और नैसर्गिक इच्छाएँ संग्रहित रहती है और साथ ही साथ उसकी दमित इच्छाएँ भी संग्रहित रहती है। उनके अनुसार मनुष्य का इदम (Id) पूर्ण रूप से अचेतन में कार्य करता है और उसे दमित इच्छाओं की पूर्ति के लिए उत्प्रेरित करता है।

Scanned with CamScanner

Page - 3

और तुरन्त संतुष्टि के लिए उत्तेजित करता है। इसके विपरित अहम् (Ego) चेतनमन है, यह बुद्धि, इच्छा शक्ति और तर्क शक्ति और वास्तविकता से सम्बन्ध रखता है और व्यक्ति को वास्तविक परिस्थितियों के साथ समायोजन के लिए प्रेरित करता है।

⇒ पराहम् (Super Ego) सामाजिक मान्यताओं सांस्कृतिक संस्कारों और आदर्शों से संबन्धित होता है। यह व्यक्ति को आदर्शों के पालन, समाज सेवा और राष्ट्र हित के कार्यों की ओर अग्रसर करता है। फ्रायड महोदय ने स्पष्ट किया कि 'अहम्' (Ego) सदैव 'इदम्' (Id) और 'पराहम्' (Super Ego) के बीच सामन्जस्य स्थापित करने का प्रयास करता है। जिन व्यक्तियों में यह सामन्जस्य हो जाता है वे व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों क्षेत्रों में समायोजन करने में समर्थ होते हैं और उन्हें सुसमायोजित व्यक्तित्व कहा जाता है। इसके विपरीत जिन व्यक्तियों में इदम्, अहम् और पराहम् के बीच संघर्ष बना रहता है वे व्यक्ति व्यक्तिगत अथवा सामाजिक किसी भी क्षेत्र में समायोजन नहीं कर पाते और उनका आचरण अन्यथा होता है। ऐसे व्यक्तियों को कुसमायोजित व्यक्तित्व वाला व्यक्ति कहा जाता है।